जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

09 मार्च 2023

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने मनाया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के समाजशास्त्र विभाग ने 6 मार्च, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में "Engagement with Marginality: Women and Tribes in India" विषय पर एक विस्तार व्याख्यान आयोजित किया। व्याख्यान की शुरुआत विभागाध्यक्ष प्रो. मनीषा टी. पाण्डेय के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने भारत में जनजातीय अध्ययन के प्रसिद्ध और सम्मानित प्रोफेसर, प्रो. वर्जिनियस खाखा का वक्ता के रूप में परिचय कराया, जिसमें उनकी उपलब्धियां और अकादमिक प्रकाशन का उल्लेख किया। वर्तमान में प्रो. खाखा मानव विकास संस्थान, नई दिल्ली में विजिटिंग प्रोफेसर हैं।

व्याख्यान मुख्य रूप से तीन खंडों-(i) मार्जिनेलिटी के विचार (ii) जनजातियों को एक मार्जिनल समूह के रूप में स्थापित करना; और (iii) असमानता के मुद्दे- में विभाजित था। वक्ता ने इस बात पर प्रकाश डाला कि धन, प्रतिष्ठा और शक्ति तक पहुंच की कमी के कारण सामाजिक बहिष्कार में हाशिए की जड़ें कैसे पाई जाती हैं, जो कि कुछ सर्वोत्कृष्ट मूल्य हैं जिन पर सामाजिक एकीकरण और सामाजिक सम्मान का आधार है।

यह टॉक इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे मार्जिनेलिटी एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है और इसे कैसे उत्पन्न किया जाता है, यह विद्वानों के बीच विवाद का एक विषय है, जिसे एक जिज्ञासु प्रक्रिया शुरू करने के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है जो कि ऐतिहासिक पूर्व-परिप्रेक्ष्य के तहत बारीकियों को प्रकट करती है जो मार्जिनेलिटी के रूपों को जन्म देती है और बनाए रखती है। उत्तर-औपनिवेशिक भारत में, विभिन्न जनजातीय समुदायों को प्रतिनिधित्व योजनाओं के माध्यम से भारतीय राज्य के दायरे में शामिल करने और एकीकृत करने के प्रयास, राज्य के माध्यम से किए गए थे न कि उचित सामाजिक व्यवस्थाओं के माध्यम से जो इस कठिन कार्य के लिए आवश्यक थे। प्रो. खाखा ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे आदिवासी आबादी गरीबी रेखा से नीचे की आबादी का एक बड़ा हिस्सा है।

प्रो. खाखा ने आगे जनजातियों के बीच लैंगिक असमानताओं की उपस्थिति पर प्रकाश डाला, कि समय के साथ ये कैसे बढ़ जाते हैं क्योंकि उन्हें मुख्यधारा में शामिल किया जाता है। उनका अध्ययन दर्शाता है कि कैसे आदिवासी महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में है। उनके व्याख्यान ने नारीवाद के विमर्श में जनजातीय महिलाओं की स्वायत्तता से संबंधित प्रश्नों को भी जोड़ा।

मनोरम और अंतर्दृष्टिपूर्ण व्याख्यान के बाद एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें संकाय और उपस्थित विद्वानों और छात्रों ने प्रश्न पूछे। कार्यक्रम का समापन डॉ. गोमती एच. बोदरा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया